Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019

SPECIAL ISSUE- 83

खण्ड - तीन

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श

(किन्नर, वृध्द, किसान तथा नारी)

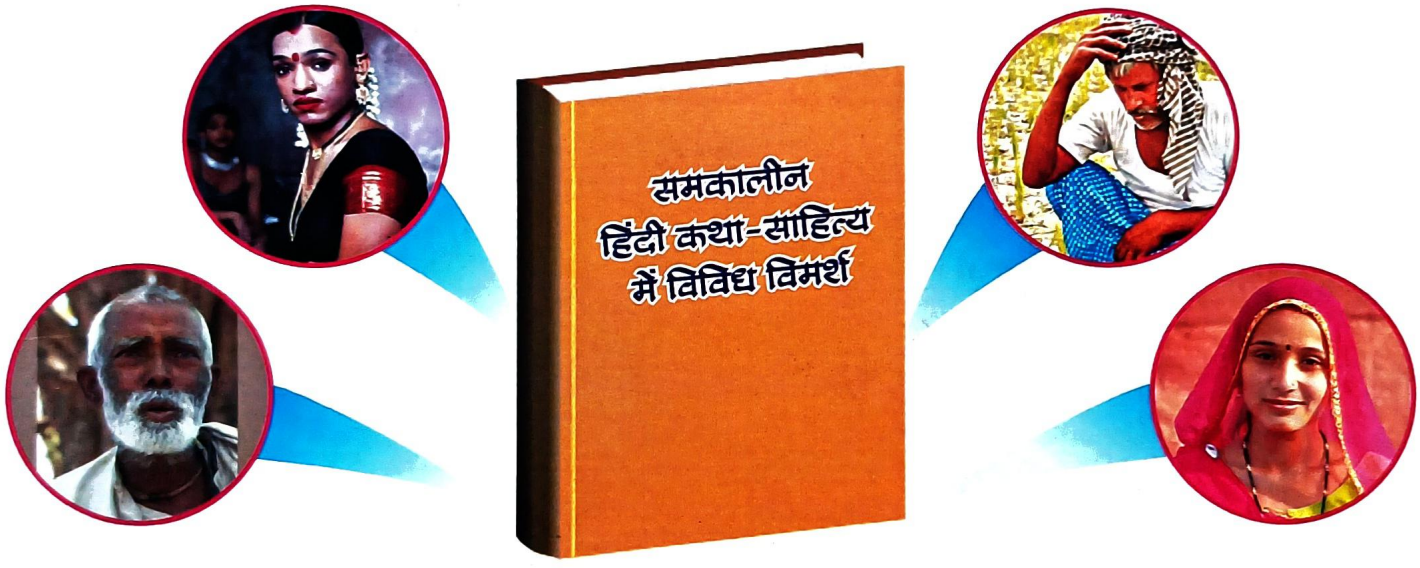

विशेषांक संपादक :

डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.

अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

अनुक्रमणिका

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ.मधुकर खराटे	09
2	अनुसूया त्यागी कृत मै भी औरत हुँ में किन्नर विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा	16
3	किन्नरों के जीवन का यथार्थ चित्रण	डॉ.शंकर शिवशेट्टे	22
4	तिसरी तली का सच	चंदना जैन	26
5	गुलाम मंडी उपन्यास में किन्नर विमर्श	डॉ.पिरू. आर.गवली	30
6	किन्नरों की व्यथा- कथा को व्यक्त करता उपन्यास : 'जिंदगी ५० -५०'	डॉ.साहेबहूसैन जे. जहागीरदार	36
7	संघर्षो, पीडाओं और दर्द से भरा किन्नर जीवन 'मै हिजडा ...मै लक्ष्मी ..'के विशेष संदर्भ में	डॉ.एस.एन.तायडे	39
8	हिंदी कहानियों में किन्नरों की समस्या	डॉ.शेख सैबाशिरीन हारून रशीद	44
9	कबीरन कहानी में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ.सदानंद भोसले, राजेंद्र वरपे	47
10	हासिए का समाज- किन्नर	डॉ.अनिल साळुंखे	51
11	नीरजा माधव के यमदीप उपन्यास में किन्नर विमर्श	प्रा. समाधान नागणे, प्रा.देवेंद्र देवकुळे	55
12	एक और तिसरी दुनिया – पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपरा	डॉ. जयश्री शिंदे	59
13	किन्नर कथा में मानवतावादी दृष्टिकोण	डॉ. सविता प्रमोद	63
14	हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ. रविंद्र पाटील	67
15	तृतीय पंथीयों का जीवन संघर्ष: 'जिंदगी ५०-५०'	तेजश्री पाटील	69
16	अधुरी देहधारी : मै पायल.....	शीला घुले	71
17	उपेक्षित वृद्ध जीवन की दास्तान: समय सरगम	डॉ. अपर्णा कुचेकर	74
18	२१ वीं शती के हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ.अशोक मरळे	77
19	जिंदगी की संध्यबेला से भायाक्रांत दौंड	प्रा.निवृत्ती लोखंडे	81
20	कृष्णा सोबती के 'समय – सरगम' उपन्यास में वृध्द –विमर्श	प्रा.दादासाहेब खांडेकर	84
21	कृष्ण बलदेव वैद के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ. हणमंत पवार	93
22	कृष्णा सोबती की कहानी दादी-अम्मा में वयोवृद्ध स्त्री की विवंचना	डॉ. मदन खरटमोल	98
23	समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श	ज्ञानेश्वर मेहेरकर	101
24	वृद्ध जीवन की सही पहचान:रमेशचंन्द्र शाह के उपन्यास	साहेबराव काम्बले	104
25	हिमांशु जोशी के कथा- साहित्य में वृद्धजनों के प्रति संवेदना	श्रीमती अरुणा	106
26	वृद्ध विमर्श 'बूढी काकी', 'चीफ की दावत' तथा 'वापसी' कहानी के विशेष सन्दर्भ में	इबरार खान	111
27	नई दुनिया और बुढापा : एक सामाजिक चिंतन	कु.अनिता राऊत	115
28	हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श	झिल्ली नायक	118
29	किसान विमर्श और फॉस	डॉ.गिरीश काशिद	120
30	समकालीन हिंदी- मराठी उपन्यासों में गाँव	डॉ.मनोहर भांडारे	128
31	फॉस उपन्यास और किसान विमर्श	रेवनसिद्ध चव्हाण, प्रो.सदानंद भोसले	131
32	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित किसान जीवन	रामेश्वर वाढेकर, विकास वाघमारे	134

RESEARCHJOURNEY

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 3) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

हिमांशु जोशी के कथा-साहित्य में वृद्धजनों के प्रति संवेदना

श्रीमति अरुणा,
रायचूर - कर्नाटक

हिमांशु जोशी जी को भारतीय साहित्य में मानवीय संवेदना का अवतार कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।जोशी जी का दृष्टिकोण मानवतावादी रहा है।इसलिए उनके समग्र कथा-साहित्य में मनुष्य की मानवता व्याप्त है। जोशी जी का मानवतावादी दृष्टिकोण, एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मनुष्य तक ही सीमित न होकर जड़-चेतन सब की भलाई करता अपना धर्म समझता है।अतः कहा जा सकता है कि मानवतावाद का संबंध नैतिकता से है और इसका उद्देश्य मानव और सामाजिक अभ्युत्थान है।यह मनुष्य को बन्धुत्व के भाइचारे के सूत्र में बांधना चाहते है।मैं कहना चाहूँगी की जोशी जी के आदर्श पात्र 'प्रवृत्ति और निवृत्ति' के मध्य जो सेवा धर्म है, उसमें दीक्षित है।उनकी दृष्टि किसी महामानव की कल्पना में लीन नहीं कही जा सकती, बल्कि वे तो साधारण मानव को ही अधिक-आदरणीय एवं श्रेष्ठ मानते हैं।यह जोशी जी का मानवधर्म है, मानवीयता है, मानवतावाद है।अब हिमांशु जोशी जी के कथा-साहित्य में दिखाई देनेवाली मानवीय संवेदना को अलग-अलग मुद्दों के द्वारा प्रस्तुत करेंगे।

आज का साहित्यकार सामाजिक दायित्व को आत्मोपलब्धि के रूप में इसलिए स्वीकार करता है, क्योंकि साहित्य मनुष्य के सांस्कृतिक मूल्यों की उपलब्धि है और बिना इसके वह उसे अपनी सर्जनात्मक प्रक्रिया का अंग नहीं बना पाएगा जो साहित्य कालातीत है, वह निश्चय ही आत्मोपलब्धि का साहित्य और अपने युग की सांस्कृतिक चेतना के साथ घनिष्ठतम रूप में सम्बन्ध है।यही कारण है कि आज का कोई भी साहित्यकार अपने युग जीवन को आत्मगत सत्य के रूप में ही स्पष्ट करने की चेष्टा करता है।वह अपनी आंतरिक संवेदना को अपने वैयक्ति स्वातंत्र्य की शर्त स्वीकार कर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने का प्रयत्न करता है।वह जीवन के अंदर से जीवन का साक्षात्कार करता है और यह आत्मान्वेषण की प्रक्रिया भी है, जिससे मानवीय मूल्यों को गति प्राप्त होती है।

आज के कथा-साहित्य की मूल संवेदता के सम्बन्ध में यथार्थ पर विचार करना भी आवश्यक है।जीवन एब यथार्थ है।हमारा भावुक होना यथार्थ है।अनुभूतियों के स्तर पर हमारा संवेदनशील होना यथार्थ है। हमारा दुःखी होना या सुखी होना यथार्थ है।उस यथार्थ को उपन्यास में कहानीयों में ही समझा जा सकता है।प्रश्न उठता है कि यथार्थ के वे नए धरातल कौन से हैं, जिन पर आधुनिक कथा-साहित्य की मूल संवेदना निर्भर करती है? आज का कथा-साहित्य मनुष्य और उसके संसार के यथार्थ को दो भिन्न-भिन्न संदर्भों में स्वीकार नहीं करता और मानव मुक्ति को इसी संसार से संबधित करता है।

इस प्रकार मानव विशिष्टता के प्रति अधिक आग्रहशील बन जाता है। आज के कथा-साहित्य में यह नया यथार्थ व्यक्ति की मर्यादा को नष्ट किए बिना व्यापक परिवेश देने की चेष्टा करता है।इस प्रकार यथार्थ को आज का कथा-साहित्य वस्तुसत्य के रूप में देखने का प्रयत्न करता है।

आज का कथा-साहित्य यथार्थ को खण्डित नहीं करता, बल्कि मनुष्य को वह चेतना देता है कि वह इतिहास का यांत्रिक पूर्जा नहीं वरन् उसके विकास एवं गतिशीलता में सहभागी है।इससे मानवीय संवेदनाओं के समक्ष वर्जनाओं तथा कुण्ठाओं का महत्त्व नहीं रह जाता है।

हिन्दी कथा-साहित्य की आधुनिक संवेदना में कई विभिन्न विचार धाराओं के साथ बहुमूल्य सूत्र को सही-गलत दोनों रूपों में प्रस्तुत किया गया है।समाज के बन्धनों, स्थापित नैतिक मूल्यों की निरंकुशता एवं परंपरागत रूढ़ियों से उबकर यदि आज का युवा-वर्ग अकेला होना अधिक अच्छा समझता है या स्वच्छंद जीवन आचार के प्रति आग्रहशील हो जाता है, तो इसमें विस्मय की कोई बात नहीं है। अतः अकेलापन, अजनबीपन, विरागपन, निस्संगता तथा एकाकीपन-समसामयिक वेनदा श्रम मनीषा की नियति है। इन सभी की उपेक्षा उपन्यास, कहानी कर ही नहीं सकते आज के बौद्धिक प्राणी के लिए इन सभी से असंपृक्त रहना कठिन भी है।

अंतः आधुनिक कथा-साहित्य की संवेदना में विराग, कुण्ठा तथा निस्संगता जीवित तत्त्व है।उन्हें नकारने का अभिप्राय मूल सत्य की उपेक्षा करता है।हिन्दी कथा-साहित्य की आधुनिक संवेदना में इन विभिन्न प्रवृत्तियों का बड़ा ही रसमय घोल मिलता है।नयी संवेदना का पयार्य यह विषमय कसैलापन है, जो आहत करना है, हतसंज्ञ भी करता है, नयी प्राप्त सज्ञता इसी दर्शन से उद्‌भूत है।

सृजनशील एकाकीपन इस प्रकार उपन्यास की मूल संवेदता है, लेकिन जब इसे फैशन या अलंकरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो रचना के स्तर पर हास्य भी निश्चित होता है।समाज अपनी परिस्थिति के अनुरुप बदलता रहता है।समाज में लेखक अपनी यातना को जो रुप देता है, वह समाज के लिए उपेक्षणीय नहीं है।समाज से पलायन कर सृजन कार्य नहीं हो सकता है।लेखक अपनी आवश्यकता के व्यापक भावभूमि प्रदान करता है, इसमें कोई भी अंतरोध नहीं है।

वस्तुतः रचनाकार के सत्य को न तो झुठलाया जा सकता है, न विकृत ही किया जा सकता है।वह सत्य केवल अनुभव किया जा सकता है, परिभाषित नहीं।भाषा जहाँ आधुनिक संवेदना को संप्रेषित करती है, वहीं नचना की अंतर्हित प्रामाणिकता उसे प्रभावशाली बनाती है।आज के लेखक का संसार विचारों का संसार है, जिसे वह यथार्थ की भाषा व्यक्त करता है।इससे ही साहित्यकार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक यथार्थ को प्रस्तुत करता है। नित्य-प्रति के कार्य व्यापार को वह अपनी सर्जनात्मक मेधा से इतना परिवर्तित कर देता है कि वे नया अर्थ बोध ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन जब भाषा सहज, एवं अर्थ गंभीर नहीं होती, तो इस संवेदना का रूप खंड़ित भी होता है और सारे अर्थ या तो बदल जाते है या धुंधले पड़ जाते हैं।जब प्रतिमान जीवित होते हैं, तो भावों को मुखर करते हैं और प्रतिमान तभी जीवित होते हैं जब अर्थ-गंभीर हो।प्रतिमानों का उपयोग अलंकरण नहीं है।अंत में एक बात कहना आवश्यक है कि नई संवेदना का अर्थ परंपरा को नकारना नहीं है। परंपरा केवल अतीत का शव मात्र नहीं है।वह जीवित होती है और समकालीन से उसका जीवन्त सम्बन्ध होता है।इन दोनों को पृथक नहीं किया जाता और इसी संतुलन से नई संवेदना का जन्म होता है।

समय रूप से कथा-साहित्य के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि इसमें मानव मात्र की आशओं-निराशाओं, सुख-दुःख, अपेक्षाओं, मान-अपमानों, राग-द्वेष, हर्ष-शोक, प्रेम-घृणा, विस्मय, उत्सह, कुंठा आदि के साथ साथ सामाजिक विषमता, रूढ़ियों, परंपराओं में जकड़ा मजबूर मनुष्य और उसकी टूटती-विरवरती आशा, मध्यवर्गीय तनाव, घुटन तथा अजनबीपन आदि की सोद्देश्य अनुभूति करा देना एवं मनुष्य को मनुष्यत्व की पहचान करा देना ही आधुनिक साहित्यकार की वास्तविक संवेदना है। उपर्युक्त सभी संवेदना को हम हिमांशु जोशी के कथा-साहित्य में देख सकते हैं।हिमांशु जोशी हिन्दी के उन बड़े कथाकारों में से है, जिन्होंने अपने पात्रों को बड़ी ममता और संवेदना से रचा है और उन्हें करूणा का एक ऐसा

अक्षयकोष सौंप दिया है कि वे हमें बार-बार मानवीय करूणा और विडंबना की डबड़बाई आँख के आगे ला खड़ा करते हैं।उनके पात्र अपनी संवेदना की अजस्त्र धारा में इस कदर बहा ले जाते हैं कि उनकी कोई भी कृति को यदि पाठक एक बार शुरू कर देने के बाद बीच में कहीं छोड़ देना असंभव है।हम मानों करूण नियति झेल रहे, उनके पात्रों के साथ-साथ ही थपेड़े खाते हुए,कथा के अंत तक पहुँचने के लिए विकल हो उठते हैं।यही हिमांशु जोशी के कथा-साहित्य का जादुई सम्मोहन है, जो पाठकों की विभिन्न संवेदनाओं के द्वारा इस कदर बाँध लेता है कि हिमांशु जोशी की कोई भी कृति पाठक एक बार पढ़ लेता है तो फिर बार-बार उनकी कृति को तलाश ने में जुट जाते हैं।आगे में हिमांशु जोशी के कथा-साहित्य में पाई जाने वाली वृद्धजनों के प्रति संवेदना का उल्लेख करूँगी।

वृद्धजनों के प्रति संवेदना :

वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की करूण कथनी है।इस अवस्था में पहुँचकर मनुष्य कितना विवश, असहाय और दयनीय बन जाता है, यह तो एक भुक्तभोगी हृदय ही समझ सकता है।पूर्ण यौवन काल में अपने आप को सशक्त, सर्वश्रेष्ठ समझने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में, लाचार, विवश और पराश्रित होने पर बाध्य हो जाता है, पर इस अवस्था में भी वह लोभ, मोह आदि से वंचित नहीं रह पाता है।क्योंकि **"बचपन मिठाईयों का, यौवन प्रेम और लालसाओं का और बुढ़ापा लोभ का समय होता है।"** परंतु वृद्धावस्था में व्यक्ति को अपने जीवन की निस्सारता भी प्रतीत होने लगती है।इतिहास साक्षी है कि वृद्धावस्था के कष्टों की कल्पना मात्र ने राजकुमार विद्धार्थ के मन में सांसारिक सुखों से विरक्ति पैदा कर दी थी।

वर्तमान युग में संयुक्त परिवारों के विघटन से वृद्धजनों की स्थिति और भी दयनीय होती जा रही है।आज की युवा पीढ़ी उनकी देख-भाल से उदासीन होती जा रही है।बल्कि पूर्णतः विमुख हो चुकी है।ऐसे वृद्धजनों के प्रति जोशी जी में अपार संवेदना दिखाई देती है।उन वृद्धजनों के जीवनयापन सेवा-सुश्रुषा आदि के प्रति सहानुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति उनके कथा-साहित्य में हुई है।

'बनस बीत गया' कहानी में अनन्त पलटन में है।एक बार भयंकर गोलाबारी में अनंत शहीद हो जाता है।इसका गहरा प्रभाव वृद्ध माता-पिता पर पड़ता है।वह अकेले असहाय हो जाते हैं।ताउजी अपनी वेदना छिपाकर अनन्त की माँ को दिलासा देते हुए कहते हैं कि **"अनन्त की माँ, हमारा अनन्त मरकर भी अमर हो गया। तू रो - रोकर उसकी आत्मा को दुःख क्यों देती है ? फिर अपने आप बुदबुदायेंगे।स्वयं से बातें करने लगते... बैरी निकला पूरब जनम का। इस बुढ़ापे में आके आज यह दिन भी देखना पड़ा।"**

'आँखे' कहानी के बाबा बुढ़ापे तक परिवार का बोझढोते हैं। बुढ़ापा आने से धीरे-धीरे बाबा की आँखें धुंधली होती चली गयी।जिससे परिवार में धीरे-धीरे उनका मान कम होने लगता हैं, उनके साथ अयोग्य बर्ताव होने लगता है और सभी लोग उनका मजाक उड़ाने लगते है। जैसे -**"नानाजी (काकी के पिता) बात-बात पर बाबा की खिल्लियाँ उड़ाते। मुँह बनाया करते।उनकी देखा-देखी बच्चों ने भी यही सीख लिया।बाबा को दमा था। बार-बार खाँसी आती।बच्चे भी उनके मुँह के सामने मुँह ले जाकर खो-खो खाँसने लगते।बाबा को डकारे आती।वे भी बिना बात डकारते।बाबा कुछ झुककर चलते।वे भी वैसे ही झुका बरते।"**[3] बाबा की सेवा करना तो दूर मगर उनके इलाज के लिए भी उनके बेटे साफ मनाकर देते हैं।**"अब क्या देखना है जिसकी इत्ती लालसा है।एक पाँव मसान में, दूसरा घर पर। इस बुढ़ापे में भी क्या कहीं आँखें लौटती है।"**

'पाषाण गाथा' कहानी में वृद्ध बुढ़े कलाप्रेमी कैदी के प्रति जोशी जी ने संवेदना दिखाई है।बुढ़ा कैदी बेकसुर था, उसने अपने बेटे का इल्जाम अपने सर ले लिया था।क्योंकि भरी जवानी में उसे फाँसी के तख्ते पर झुलते या उमर कैद की सजा काटने बूढ़ा नहीं देख सकता था। इसलिए जुर्म बुढ़े ने खुद ओढ़ लिया।फिर बूढ़ा बताता है कि **"सब मुझसे घृणा करते हैं।यही समझते हैं कि यह सब बुढ़ापे में मैंने ही किया। सगे-संबंधी कतराते हैं।पत्नी मेरा मुँह तक देखना नहीं चाहती..... जिस बेटे के लिए मैंने यह सब किया, वह मुझे कब का मरा मान चुका है..."** बूढ़े की अवहेलना हुई फिर भी उसने कारावास में मजदूरी करके अपने बेटे के लिए रूप्ये जमा किये।

'जड़े' कहानी में नंदा बल्लभ के पिता की करूण एवं दयनीय दशा को जोशी जी ने संवेदनशील ढंग से चित्रित किया है।नंदा इकलौता बेटा, फौज में आतंकवादियों से मुठभेड़ में कहीं मारा गया।परिणामस्वरूप उसके पिता एवं परिवार असहाय हो गये। सरकार की ओर से जो सहायता मिली थी, वह सब सरकारी मुलाजिम और निकट के सगे-संबंधी हजम कर गए।जिससे नंदा के पिता की वृद्धावस्था करूण हो गयी।नंदा के पिताली **"जीवन भर जिस सच से इतता डरते रहे, आज जीवन की इस संध्या में, जिस सच को जी रहे हैं, उसे देखने मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं।**

अस्सी वर्ष की अवस्था !
अपंग देह !
अंधी आँखें !
एक विधवा बहू !
एक अनाथ पोता, जिसके दूध के दाँत भी अभी टूटे नहीं!"

वृद्धावस्था में असहाय एवं पुत्र द्वारा उपेक्षित वृद्ध को जोशी जी ने 'आश्रय' कहानी के माध्यम से चित्रित किया है।श्रेया और प्रियांशु न्यूजर्सी में रहते हैं।प्रियांशु के माता-पिता दिल्ली में रहते हैं।माता की मृत्यु के बाद बिमार, अकेले और असहाय पिता हो जाते हैं।परिणामस्वरूप श्रेया उनका घर बेचकर उन्हें वृद्धाश्रम में भेज देने के लिए प्रियांशु को कहती है, मगर प्रियांशु इसका विरोध करता है। मगर श्रेया सब कुछ तय कर चुकी थी। इससे प्रियांशु परेशान एवं उग्र हो जाता है।उसी समय दरवाजा खोलकर पापा आते हैं और बताते हैं कि **"पगले हो तुम! व्यर्थ में शोर मचा रहे हो।मैंने तुम्हारी सारी बातें सुन ली है। अरे, तुम्हारे भारत आने से पहले ही मैंने 'ओल्ड होम' में अपने लिए जगह बुक करा ली है।"**

'दाह' कहानी में अखिल के ताऊजी द्वारा वृद्धावस्था की करूणता दिखाई पड़ती है।ताऊजी का बेटा नर'दा तराई की सड़ी गरमी में मिट्टी-पसीने में घुल-घुलकर मर गया।घरवाली छिछली चट्टान से गिरकर पहले ही चल बसी थी।अब जैसे तैसे ताऊजी ने खा, न खाकर झूस जैसे तिनाड़ पौते को पाला-पोसा, मिडल पढ़ाया मगर वह भी बूरी सोहबत में पड़कर बिगड़ गया।सबको भिखमंगा करके पापी खुद चल बसा।जवान इकलौते पोते का सदमा सह नहीं पाये बेचारे।पूरी तरह मगला गये। नरबल्लभ प्रधान कहते हैं, **"हे परमेसर, न देना ऐसा दुःख किसी को! थ्तनके जैसा एक सहारा था, वह भी भरपूर जवानी में धोखा देकर चजा गया।यह दुर्दिन देखने से तो अच्छा था, बुढ़ऊ की पहले ही आँखें मुँद जाती।पता नहीं, किस पाप के पहाड़ के ढोने के लिए इस चौथी अवस्था में जिन्दी है ?"**

'एक बार फिर' कहानी में चित्रित परिवार के पिता वृद्ध एवं बिमार होते हैं तभी उसके जीते जी बेटे जो कुछ बचा-खुचा समेटने में महाभारत मचाते हैं वह बीमार पिता पर निर्दयी होकर खुलेआम इल्जाम लगा

के दूसरों के सामने बेनकाब करते हैं। इस वातावरण को देखकर पिता को कहीं शांति नहीं मिल पा रही थी।सबकी आँखें उन्हें घृणा से, उपहास से घूरकर देखती जिससे वृद्ध पिता स्वयं को कमरे में बंद कर लेते हैं। खुली खिड़की के पास बैठे-बैठे रात और दिन बिताते रहते हैं।उसे विचार आता है कि **"मर-मरकर जहाँ इतनी जिंदगीयाँ जी, वहाँ एक बार फिर जी जीकर मरण देखने में क्या हर्ज।"**

'छाया मत छूना मन' उपन्यास में वसुधा के पिता बिशनदास की वृद्धावस्था का दयनीय चित्रण जोशी जी ने संवेदनशील ढंग से किया है।बिशनदास पक्षाघात की बिमारी का शिकार हो जाते हैं।जिससे उसका फिरना, चलना, काम पर जाना बंद हो जाता है।परिणामस्वरूप पत्नी और पुत्री कंचन उसकी अवहेलना करती है। आये दिन घर में महाभारत मचा रहता। सारी बातों के लिए दोषी वृद्ध एवं रूग्ण पिता को ठहराया जाता। **"पिता की दयनीय स्थिति देखी न जाती, उस पर माँ अकारण झिड़क देती।डबडबायी आँखों से पिता तब छत पर कुछ खोजने लगते, विवश भाव से।"** वसुधा के माध्यम से बिशनदास की करूणता एवं उपेक्षित भावना दिखाई पड़ती है।

'अरण्य' उपन्यास में मानिक की माँ की वृद्धावस्था, लाचारी एवं करूणता को दिखाया गया है।मानिक माता-पिता को छोड़कर भाग जाता है।पिता की मृत्यु के बाद घर आता है, लेकिन काम करने के बजाय वृद्ध माँ से लड़ता-झगड़ता है और बूरी आदतों में फँस जाता है।मानिक की कृशकाय वृद्ध अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कावेरी को कहती है कि **"मेरे खोटे करम तो चेली, पहले ही फूट गये।कैसे बाप की कैसी नौहाल औलाद जनमी! ऐसी गहरी चोट लगने पर भी अकल आयी नहीं। ...क्या करूँ? कैसे मरूँ? यह पापी परान निकाले निकलता भी तो नहीं।"**

इन वर्णनों से संकेत मिलता है कि जोशी जी ने वृद्धावस्था को अति कष्टकारी अवस्था माना है।इस दयनीय एवं असहायवस्था में अपने पुत्रों के पास रहने, पुत्रों का साथ या उससे मिलनेवाली अवहेलना, पुत्र की मृत्यु और असहाय बीमानी से छुटकारा पाने के लिए लालायीत वृद्धजनों का हृदयस्पर्शी चित्रांकन जोशी जी ने अपने कथा-साहित्य में संवेदनशील ढंग से किया है।

संदर्भ :

१. हिमांशु जोशी - जलते हुए डैने तथा अन्य कहानियाँ - पृ.सं. १३,२०५
२. हिमांशु जोशी - नवभारत टाइम्स - जून १९७७ - पृ.सं. ६७
३. हिमांशु जोशी - जलते हुए डैने तथा अन्य कहानियाँ - पृ.सं. ६७,१६,१०८,१४५,१९८
४. हिमांशु जोशी - सागर तट के शहर - पृ.सं. ३२,४८

COSMOS IMPACT FACTOR

Search

HOME | INDEXED JOURNAL | SUGGEST JOURNAL | REQUEST IF | DOWNLOAD LOGO | REVIEWER PANEL

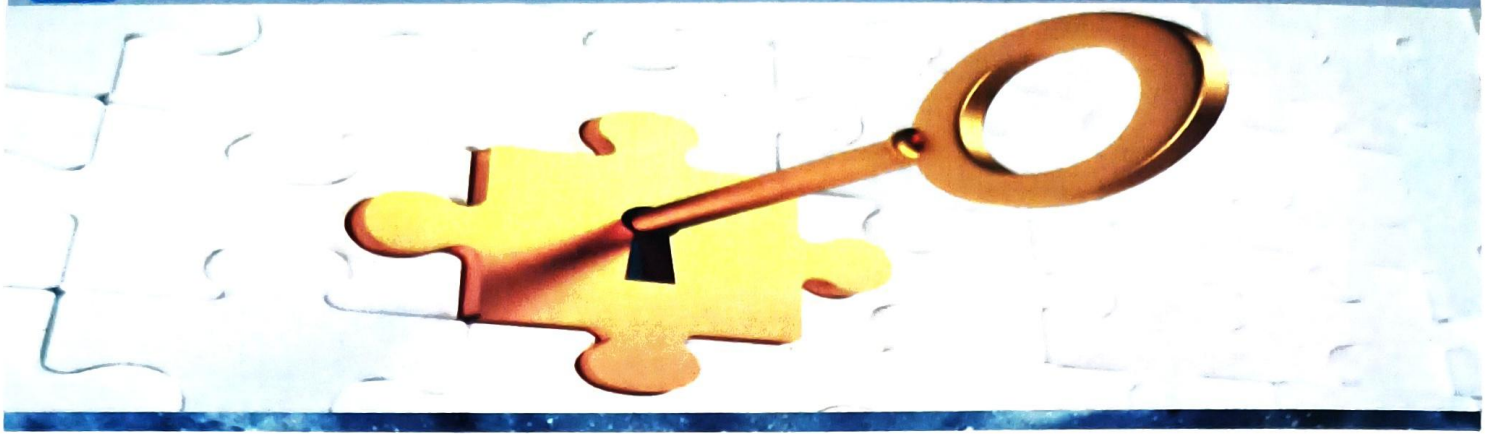

Category

- INDEXED JOURNAL
- SUGGEST JOURNAL
- JOURNAL IF
- REQUEST FOR IF
- DOWNLOAD LOGO
- CONTACT US

SAMPLE CERTIFICATE

SAMPLE EVALUATION SHEET

Journal Detail

Journal Name	RESEARCH JOURNEY
ISSN/EISSN	2348-7143
Country	IN
Frequency	Quarterly
Journal Discipline	General Science
Year of First Publication	2014
Web Site	www.researchjourney.net
Editor	Prof. Dhanraj Dhangar & Prof. Gajanan Wankhede
Indexed	Yes
Email	researchjourney2014@gmail.com
Phone No.	+91 7709752380
Cosmos Impact Factor	2015 : 3.452

GIF
GLOBAL IMPACT FACTOR

Institute for Information Resources

News Updates Now Annual membership fee is of just 40 Dollars for existing members and they can renew their membership for year 2016

Get Involved

Home

Evaluation Method

Journal List

Apply for Evaluation/Free Service

Journal Search

Recently Added Journals

Research Journey	
ISSN	2348-7143
Country	India
Frequency	Quarterly
Year publication	2014-2015
Website	research/journey.net
Global Impact and Quality Factor	
2014	0.565
2015	0.676

Research Journey

SJIF 2018:

Under evaluation

Area: Multidisciplinary

Evaluated version: online

Previous evaluation SJIF

2017: 6.261
2016: 6.087
2015: 3.986
2014: 3.009

The journal is indexed in:

SJIFactor.com

Basic Information

Main title	**Research Journey**
Other title [English]	Research Journey
Abbreviated title	
ISSN	2348-7143 (E)
URL	http://WWW.RESEARCHJOURNEY.NET
Country	India
Journal's character	Scientific
Frequency	Quarterly
License	Free for educational use
Texts availability	Free

SWATIDHAN PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Price : Rs. 900/-